दिग्विजय कुमार राय
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

दिनांक 10.8.2020

<u>पंचम सेमेस्टर</u> (जुलाई-दिसम्बर 2020)

प्रथम प्रश्नपत्र [अद्यतन हिन्दी काव्य (भाग-1)]

प्रिय बच्चों,

आज ~~पहली~~ इस सेमेस्टर की पहली कक्षा है। हम लोगों को प्रथम प्रश्नपत्र पढ़ना है। इस प्रश्नपत्र का नाम है – अद्यतन हिन्दी काव्य (भाग1)। इसका अर्थ हुआ कि अद्यतन काव्य को एक से अधिक भागों में बाँटा गया है। यहाँ इसके दो भाग किए गए हैं। दूसरे भाग को द्वितीय प्रश्नपत्र में पढ़ना है। इस प्रश्नपत्र में यानी प्रथम प्रश्नपत्र में चार कवि हैं — अज्ञेय, शमशेर बहादुर सिंह, नागार्जुन एवं गजानन माधव मुक्तिबोध। सबसे पहले आप पूरा पाठ्यक्रम नोट कर लीजिए और परीक्षा में अंकों का बंटवारा कैसे होगा, यह भी जान लीजिए।

पंचम सेमेस्टर

प्रथम प्रश्नपत्र : अद्यतन हिन्दीकाव्य (भाग-1)

(पूर्णांक : 80+20 (आंतरिक मूल्यांकन =100)

निर्धारित कवि : सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय',
शमशेर बहादुर सिंह,
नागार्जुन,
गजानन माधव 'मुक्तिबोध'।

पाठ्यपुस्तक – अद्यतन काव्यमंजरी
संपादक – 1. प्रो॰ रीता चौधरी
2. प्रो॰ सूरज बहादुर थापा

प्रथम प्रश्न – अनिवार्य दस लघूत्तरीय प्रश्न 10×2=20
इकाई 1 – सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' और शमशेर बहादुर सिंह के निर्धारित काव्यांशों से सम्बन्धित व्याख्याएँ 8+7=15
इकाई 2 – नागार्जुन और गजाननमाधव 'मुक्तिबोध' के निर्धारित काव्यांशो से सम्बन्धित व्याख्याएँ। 8+7=15
इकाई 3 – सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' और शमशेर बहादुर सिंह पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। 8+7=15
इकाई 4 – नागार्जुन और गजाननमाधव 'मुक्तिबोध' पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। 8+7=15

हमें अद्यतन काव्य पढ़ना है। अद्यतन का अर्थ होता है – आज का, आज के दिन का, आज से सम्बन्धित। अद्य संस्कृत भाषा का शब्द है। इसका अर्थ है– आज का दिन, अब, इस समय अर्थात् वह दिन जो वर्तमान समय को दर्शाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अद्यतन काव्य वह काव्य है जो नवीनतम विचारों से युक्त हो, जो इस समय की मान्यताओं के अनुकूल हो, जिस पर आज की बातों या विशेषताओं की पूरी छाप हो।

इस प्रश्नपत्र के पहले कवि अज्ञेय हैं। अज्ञेय की प्रसिद्धि 'तारसप्तक' के प्रकाशन और

'प्रयोगवाद' की चर्चा से हुई। यद्यपि उन्होंने छायावाद काल से ही लिखना शुरू कर दिया था। उनकी पहली रचना 'भग्नदूत' 1933 के आसपास प्रकाशित हुई। अज्ञेय आधुनिक भावबोध से सम्पन्न कवि हैं, इसलिए हमें आधुनिकता और आधुनिक बोध को समझना होगा। आगे की कक्षाओं में हम इस पर चर्चा करेंगे।

अज्ञेय सप्तक के प्रकाशन के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने चार सप्तक प्रकाशित किए। हमारे पाठ्यक्रम में निर्धारित जो चार कवि हैं उनमें से नागार्जुन को छोड़कर शेष तीन कवि अज्ञेय, शमशेर बहादुर सिंह और मुक्तिबोध सप्तक के कवि हैं। अज्ञेय और मुक्तिबोध 'तारसप्तक' के कवि हैं और शमशेर बहादुर सिंह 'दूसरा सप्तक' के कवि। सप्तक के कवि होने के बावजूद वे एक विचारधारा के कवि नहीं थे। अज्ञेय कहते भी हैं कि वे किसी एक 'स्कूल' के कवि नहीं हैं और न तो वे साहित्य जगत के किसी गुट अथवा दल के सदस्य या समर्थक हैं।

इस प्रश्नपत्र में हमें हिन्दी की दो प्रमुख काव्य प्रवृत्तियों — प्रयोगवाद और नयी कविता — का अध्ययन करना होगा। नागार्जुन का अध्ययन करते समय हमें हिन्दी की प्रगतिवादी काव्यधारा का अध्ययन करना होगा, क्यों कि नागार्जुन इस धारा के महत्त्वपूर्ण कवि थे।

प्रगतिवादी सौन्दर्यबोध जहाँ यथार्थवादी और समाजोन्मुखी था वहीं प्रयोगवाद व्यक्तिवाद और कलावाद में विश्वास करता था।

प्रगतिवादी साहित्य वह साहित्य था जो मार्क्सवादी चेतना के आलोक में रचा गया। मार्क्सवादी दर्शन में यह माना गया कि सृष्टि की उत्पत्ति के पीछे कोई आध्यात्मिक सत्ता नहीं है। सृष्टि का मूल तत्त्व भौतिक सत्ता (मैटर) ही है। और इस दर्शन की दूसरी मुख्य बात यह थी कि प्रारंभ से लेकर अबतक आर्थिक व्यवस्था ने ही सामाजिक, राजनीतिक व सभ्यागत संस्थाओं का रूप निर्धारण किया है। इसलिए प्रगतिवाद ने अपनी सारी चेतना पूंजीवादी व्यवस्था से उत्पन्न समस्याओं के चित्रण पर केन्द्रित की।

परन्तु यह बहुत दिनों तक नहीं चल सका। प्रगतिवादी साहित्य पर यह आरोप लगा कि वह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का राजनीतिक दस्तावेज बन गया।

1943 में तारसप्तक के प्रकाशन के साथ यह स्पष्ट हो गया कि अब कविता ने प्रगतिवाद से भिन्न चेतना ग्रहण करनी आरम्भ कर दी है।

आगे की कक्षाओं में हम इस पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

दिग्विजय कुमार राय